देशभक्त चाँदकरण शारदा की स्वतंत्रता आन्दोलन में भूमिका

डॉ.शक्ति सिंह
shaktimailsingh@gmail.com

mob. 9829531531
Lovekush Colony, Tonk Road
Kherda fatak, Sawai Madhopur (Raj.)

भारतीय राजनैतिक चेतना की पृष्ठभूमि का अवलोकन करे तो, यह प्रमाणित होता है, कि 1857 ई. के संग्राम के बाद पाश्चात्य शिक्षा के आगमन ने देशवासियों को जाग्रत करने में महत्ती भूमिका निभाई। पाश्चात्य शिक्षा शुरू करने के पीछे ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का जो भी उद्देश्य रहा हो, एक प्रत्यक्ष लाभ तो यह हुआ कि, भारतीय जनता के कुछ सम्पन्न वर्गो को राष्ट्रवाद, उदारवाद और समाजवाद जैसी विचारधाराओं की अधिकाधिक जानकारी मिलती रही और उनमें राजनैतिक चेतना का विकास हुआ।[1]

अनेक शिक्षित भारतीय दृढ़ता से यह अनुभव करने लगे थे, कि उन्हें अपनी राष्ट्रवादी मांगो को वाणी देने के लिए किसी न किसी मंच की या राजनीतिक संगठन की आवश्यकता है। फिरोजशाह मेहता, के.टी. तेलंग, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, डब्ल्यू. सी. बनर्जी, एम. जी. रानाडे और कई अन्य व्यक्तियों ने इस ओर पहल की और अनेक स्थानीय संगठन उठ खड़े हुए। उन्हीं में से एक महत्वपूर्ण संगठन ''भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस'' भी था, जिसकी स्थापना सन् 1885 ई. में हुई।[2] शीघ्र ही सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत में उसकी शाखाओं का जाल बिछ गया।

रियासतों में एक लम्बे समय तक कांग्रेस या उसके समानान्तर संगठन नहीं बन पाये। इसका मूल कारण यह था, कि रियासतों की जनता मूल राष्ट्रीय धारा से अलग–थलग पड़ गयी थी। वह दोहरी गुलामी से इस कदर जकड़ी हुई थी, कि उसमें राजनैतिक जागृति आने में समय लगा। कांग्रेस ने भी एक लम्बे समय तक रियासतों के प्रति तटस्थता की नीति अपनायी। वह नहीं चाहती थी कि, अंग्रेजों के साथ–साथ राजाओं से भी उलझा जाये।

राजस्थान के केन्द्र अजमेर से शारदा परिवार प्रारम्भ से ही कांग्रेस से जुड़ा हुआ था। नवम्बर 1887 ई. में हरबिलास शारदा, पदमचन्द, रामगोपाल कायस्थ, फतेहचन्द खूबिया, मिट्ठन लाल भार्गव, सोहनलाल व्यास, पण्डित शिवप्रसाद आदि ने मिलकर केसरगंज अजमेर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थानीय शाखा स्थापित की।[3] 1888 ई. में प्रयाग में कांग्रेस का चतुर्थ अधिवेशन हुआ, जिसमें अजमेर नगर कांग्रेस की ओर से रामबिलास शारदा, हरबिलास शारदा, गोपीनाथ तथा किशनलाल प्रतिनिधि बनकर गये थे।[4]

चाँदकरण शारदा के पिता रामबिलास शारदा का यद्यपि सक्रिय राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं था, किन्तु वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशनों में भाग लिया करते थे। 1905 ई. में बनारस कांग्रेस से लौटे रामबिलास शारदा ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग व खादी के प्रचार पर बल दिया। इसके अतिरिक्त वे समाज सेवा के कार्यो में बढ़–चढ़ कर भाग लिया करते थे।[5]

चाँदकरण शारदा ने अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों में प्रारम्भ से ही रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। ये प्रथमतः 1911 ई. के इलाहाबाद अधिवेशन में कांग्रेस में सम्मिलित हुए,[6] जिसकी अध्यक्षता सर विलियम वेडरबर्न ने की थी, इनकी स्वलिखित निम्न टिप्पणी दृष्टव्य है–

''मैं तो पहली बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन, जो सर विलियम वेडरबर्न के सभापतित्व में हुआ, में सम्मिलित हुआ था। उसके बाद मैं प्रांतीय कांग्रेस कमेटी अजमेर, मध्यभारत और राजस्थान का प्रधान रहा, जेल में गया तथा अमृतसर, देहली, बम्बई, कलकत्ता आदि कांग्रेस अधिवेशनों में सक्रिय भाग लिया।''

रियासतों की तुलना में अजमेर में राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जागृति अधिक थी। स्थानीय लोगों ने अपनी राजनीतिक आकांक्षा की पूर्ति के लिए दिसम्बर 1915 ई. में गौरीशंकर बैरिस्टर की अध्यक्षता में कांग्रेस समिती, अजमेर का गठन किया, जिसके सक्रिय सदस्य थे– रामबिलास शारदा, हरबिलास शारदा, चाँदकरण शारदा, फतेहचन्द मेहता, बंशीधर शर्मा, बाबू चन्द्रिका प्रसाद शिक्षक, सूरजमल शारदा, प्रभुदयाल वकील, घीसूलाल एडवोकेट आदि। इसके अधिवेषन ट्रेवर टाउन हॉल व घीसाराम की धर्मशाला में हुआ करते थे।[7] चाँदकरण शारदा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान और ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य वर्षों तक रहे वे हमेशा नेशनल कांग्रेस में अजमेर–मेरवाड़ा की ओर से जाते रहें। सन् 1919 में सेठ घीसूलाल जाजोदिया के बुलावे पर चाँदकरण शारदा और मिर्जा अब्दुल कादिर बैग ब्यावर गये, इन्हीं के प्रयासों से ब्यावर में कांग्रेस समिति की स्थापना हुई।[8]

होमरूल आन्दोलन व चाँदकरण शारदा की भूमिका :–

बीसवीं सदी के प्रारम्भ होने से पूर्व ही जनसामान्य का कांग्रेस के उदारवादी वर्ग की नीतियों से मन भर गया था। देशभक्त अब खुला संघर्ष करना चाहते थे, इसी तरह के विचार स्वामी विवेकानंद के उस पत्र में मिलते हैं, जो उन्होंने 2 फरवरी 1900 को स्वामी अंखण्डानन्द को लिखा[9]–

''भयंकर अकाल, बाढ़, बीमारी और महामारी के इन दिनों में बताइए कि आपके कांग्रेसी लोग कहां हैं? क्या सिर्फ यही कहने से काम चलेगा कि देश की सरकार हमारे हाथ में सौंप दीजिए? और फिर उनकी बात सुनता भी कौन है अगर कोई आदमी काम करना चाहता है, तो क्या उसे किसी चीज के लिए मुँह खोलना पड़ता है?''

बंगाल विभाजन, प्रथम विश्वयुद्ध आदि घटनाओं से गरमपंथी विचारधारा को बल मिला। इस अवधि के दौरान भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा, गति, सामर्थ्य एवं नेतृत्व में परिवर्तन आया। इस परिवर्तन में मुख्य भूमिका लोकमान्य तिलक एवं ऐनी बिसेन्ट के नेतृत्व में चलने वाले होमरूल आन्दोलन की रही।

16 जून 1914 ई. को तिलक आठ वर्ष के कारावास के बाद जेल से रिहा हुए। तिलक व ऐनी बिसेण्ट ने मिलकर भारत में होमरूल आंदोलन प्रारम्भ करने की दिशा में कदम बढ़ाने शुरू कर दिये। होमरूल आन्दोलन की योजना मूलतः ऐनी बिसेण्ट द्वारा बनायी गयी थी। 2 जनवरी 1914 ई. को होमरूल आंदोलन की व्याख्या करते हुए ऐनी बिसेण्ट ने अपने पत्र कॉमनवील में लिखा कि ''ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के अन्तर्गत स्वशासन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर धार्मिक स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय शिक्षा, सामाजिक और राजनैतिक सुधारों को अपना आधारभूत कार्यक्रम बनाया जायेगा।''[10]

लोकमान्य तिलक ने 26 अप्रैल 1916 ई. को बेलगांव में इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना की। होमरूल आन्दोलन का उद्देश्य दोनों ही नेताओं द्वारा एक समान स्वशासन प्राप्ति निर्धारित किया गया। आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण दूरगामी प्रभाव यह था, कि पहली बार कोई जन आन्दोलन राष्ट्रव्यापी रूप में प्रसारित हुआ।[11] इस आन्दोलन ने

बम्बई, मद्रास, संयुक्त प्रान्त, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान (अजमेर) आदि क्षेत्रों में अपना स्वरूप प्राप्त किया तथा देश के राजनैतिक वातावरण को नवीन प्रकाश दिया।

प्रथम महायुद्ध से पहले क्रान्तिकारी दल की राजपूताना शाखा स्थापित हो गई थी। उस समय तक चाँदकरण शारदा भी आगरा से वकालत पास करके अजमेर आ गये थे। उनका सार्वजनिक जीवन आगरा से ही आरम्भ हो चुका था। सन् 1916 ई. में अजमेर मेरवाड़ा की ओर से प्रतिनिधि बनकर अखिल भारतीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में सम्मिलित हुए, यहाँ ये अन्य नेताओं के अतिरिक्त लोकमान्य तिलक तथा श्रीमति ऐनी बिसेन्ट से भी मिले।

चाँदकरण शारदा ने अजमेर लौटकर यहाँ भी होमरूल लीग की शाखा स्थापित की और पूर्ण उत्साह के साथ 1917 ई. से 1920 ई. तक लीग का कार्य करते रहे,[12] और इसके साथ ही उन्होंने अजमेर–मेरवाड़ा के लिये मान्टेंग्यू–चेम्स फोर्ड रिफार्म में पूर्ण अधिकार दिलाने के लिये आन्दोलन किया,[13] इसी बीच चाँदकरण शारदा इण्डियन एसोसियेषन के मंत्री भी रहे, जिस के प्रधान अजमेर के स्वर्गवासी प्रसिद्ध मौलाना मोइनुद्दीन थे।

उस काल में राजनैतिक क्षेत्र में विशेषतः होमरूल लीग में काम करने वालो को सरकार बड़ी वक्र दृष्टि से देखती थी किन्तु चाँदकरण शारदा इससे अप्रभावित रहते हुए राष्ट्रीय कार्य निर्भीक रूप से करते रहे, इन्होंने लोकमान्य तिलक, सरोजनी नायडू, डॉक्टर अंसारी, पं. मोती लाल नेहरू, पं. मदन मोहन मालवीय आदि सभी राष्ट्रीय नेताओं को समय–समय पर अजमेर में बुलाकर जनसामान्य में राजनैतिक जागृति उत्पन्न की।

रोलेट एक्टः–

अभी तक गाँधी जी अखिल भारतीय स्तर के विषयों के संबंध में अपेक्षाकृत कम ही बोला करते थे। 1919 ई. में जब सुधार प्रस्तावों पर चर्चा हो रही थी तो गांधीजी ने इन प्रस्तावों में कोई खास अभिरूचि नहीं दिखाई। जबकि भारत में सभी राजनीतिज्ञ इन्हीं प्रस्तावों पर चर्चा कर रहे थे, किन्तु फरवरी 1919 ई. में रोलेट एक्ट के पास होने के उपरान्त गाँधी जी की रणनीति में परिवर्तन आया।

रोलेट एक्ट जिसे कि ''काला कानून'' कहा गया, इसके विरोध में गाँधी जी ने अखिल भारतीय सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। इस कानून का अखिल भारतीय स्तर पर सख्त विरोध होने लगा। अनेक स्थानों पर धरना प्रदर्शन हुए। 6 अप्रैल 1919 को गाँधी जी ने अखिल भारतीय स्तर पर हड़ताल करने का निर्णय लिया। गाँधी जी द्वारा सत्याग्रह पर आधारित, यह आन्दोलन सम्पूर्ण देश में फैल गया।[14] राजस्थान के अजमेर नगर में भी रोलेट एक्ट का तीव्र विरोध हुआ ऐसे उत्तेजनापूर्ण वातावरण में चाँदकरण शारदा जैसे देशभक्त का चुप होकर बैठना असम्भव था। इन्होंने गाँधी जी द्वारा निशिचत तिथि को अजमेर में अन्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से पूर्ण हड़ताल रखी तथा इस एक्ट के विरोध में धरने–प्रदर्षन किये।

जलियांवाला बाग त्रासदी :–

पंजाब में इस समय अत्यधिक तानाशाही प्रवृत्ति वाला प्रशासक माइकल ओ. डायर गवर्नर पद पर था। डायर 1919 ई. से पूर्व महायुद्ध के दौरान अनेक कारणों से अलोकप्रिय हो चुका था जैसे– सेना में जबरन भर्ती करवाना, महायुद्ध काल

में अवैध वसूलियाँ करना, उपद्रवों का कठोरता से दमन, शिक्षित वर्ग की तीव्र भर्त्सना करना आदि, दूसरी ओर महायुद्ध के परिणामस्वरूप देश में खाद्यान्न एवं अन्य वस्तुओं के मूल्यों में बीस से तीस प्रतिशत की वृद्धि हो चली थी साथ ही बेरोजगारी, भ्रष्टता आदि से जनसामान्य पीढ़ित था।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में आये रोलेट एक्ट ने जले पर नमक छिड़कने का काम किया। इस एक्ट का सम्पूर्ण भारत में तीव्र विरोध हुआ, जगह जगह जन सभाएँ होने लगी। इसी बीच अमृतसर के कुछ जागरूक नागरिकों ने डायर की धमकियों का प्रतिवाद करने के लिए जलियांवाला बाग में एक सभा का आह्वान किया। डायर ने इसे अपनी सत्ता के लिये प्रबल चुनौती माना और उनको सबक सिखाने के लिए, बिना चेतावनी दिए उन पर गोलियों की वर्षा कर दी, जिसमें एक हजार से अधिक लोगों की मृत्यु हो गयी और लगभग इतने ही घायल हो गये। इस पर भी डायर का बयान था कि अगर उसके पास और गोलियां होती तो वह एक भी आदमी को जिन्दा नही रहने देता।[15]

अमृतसर के इस घटनाक्रम की अखिल भारतीय स्तर पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई। 25 मार्च 1920 को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के लिए चाँदकरण शारदा ने अजमेर शहीद फण्ड कोष स्थापित कर बड़ी राशि एकत्र की।[16] 6 अप्रैल 1921 ई. को दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय में प्रातः श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया तथा अध्यापकों ने शिक्षण कार्य का बहिष्कार किया। चाँदकरण शारदा व स्वामी नृसिंह देव ने दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय, नेशनल स्कूल, श्री मद्धानन्द विद्यालय तथा राजकीय महाविद्यालय के छात्रों के साथ मिलकर शहर में एक मौन जुलूस निकाला।[17]

चाँदकरण शारदा द्वारा उक्त घटना पर तीव्र प्रतिक्रिया दी गई उन्होंने अपने पत्र में लिखा– ''अमृतसर का महत्व इस वर्ष और अधिक बढ़ गया है, वहाँ कुछ अंग्रेजों ने जलियांवाला बाग में हमारे निशस्त्र भाइयों, स्त्री और बच्चों को बहुत ही बेरहमी से मारा है। मार्शल लॉ जारी कर पंजाब में दुखी भाईयों को ओर अधिक दुख पहुँचाया है। परमात्मा हमें बल दे कि, हम हमारे ऊपर किये गये इन सब भीषण अत्याचारों का बदला लें सकें। हम सबने यह प्रण कर लिया है, कि पीस सेलिब्रेशन यानि जो फतेह की खुशी सरकार 13 तारीख को मनायेगी उसमें भाग ना लें चाहे, जितनी आतिशबाजियाँ छोड़े और तमाशें दिखावें परन्तु वह दिन शोक का दिन रहेगा, क्योंकि इस फतह के कारण ही वे हम पर, इस प्रकार के जुल्म करते है। लार्ड चैम्सफोर्ड जो इस समय का लाट साहब है, उसका जितना जल्दी काला मुंह होवे उतना अच्छा है वही बदमाश है, जिसने इतने जुल्म किये।'' इस प्रकार इस घटना के प्रति अपने दुःख को उन्होंने जिस प्रकार शोक दिवस के रूप में मनाया वह उनकी देशभक्ति व देशवासियों के प्रति अटूट प्रेम का लक्षण था।

असहयोग आन्दोलन :–

असहयोग आन्दोलन गाँधी जी के नेतृत्व में 1920 ई. में प्रारम्भ हुआ, जो प्रथम अखिल भारतीय जनान्दोलन था। गाँधी जी द्वारा इस आन्दोलन में अपनी अंहिसा की तकनीक का प्रथम बार वृहत रूप से प्रयोग किया गया था। वस्तुतः असहयोग आन्दोलन से तात्पर्य ब्रिटिश सरकार के साथ असहयोग करना था, ताकि सरकार को यह अहसास हो सके, कि वह भारतीयों के साथ अनुचित व्यवहार कर रही है। महायुद्ध के पश्चात् भारतीयों को आशा थी, कि उन्हें युद्ध में दिए अमूल्य योगदान के बदले ब्रिटिश सरकार की ओर से राजनीतिक सुधारों के रूप में पारितोशित प्राप्त होगा, किन्तु यह पारितोशित माण्टेग्यू सुधार योजना के रूप में आया, जिसमें प्रान्तों में किसी प्रकार का उत्तरदायी शासन स्थापित नहीं

किया गया। अजमेर में चाँदकरण शारदा ने भी मान्टेग्यू चैम्सफोर्ड सुधार योजना के अन्तर्गत अजमेर–मेरवाड़ा को पूर्ण अधिकार दिये जाने के लिए आन्दोलन किया। इस प्रकार देश के प्रत्येक कोने में स्वाधीनता की आग धहक रही थी।

कलकत्ता में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में पास हुआ असहयोग आन्दोलन सम्बन्धी प्रस्ताव की दिसम्बर 1920 ई. के नागपुर अधिवेशन में पुष्टि कर दी गयी। असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम में सरकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा कचहरियों का बहिष्कार करना, सरकारी उपाधियों तथा मानद पदों को वापस करना तथा विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करना भी शामिल था। इस कार्यक्रम को सरकारी नौकरी से इस्तीफा देने तथा सविनय अवज्ञा तक भी बढ़ाया जा सकता था। इसमें करों की अदायगी से इन्कार करना भी शामिल था।[18] आंदोलन को अहिंसा का पालन कड़ाई से करना था। गाँधी जी ने यह विशवास दिलाया कि अगर इन सभी कार्यक्रमों को पूरी तरह लागू किया गया तो एक वर्ष के भीतर स्वराज मिल जाएगा।[19]

राजस्थान में असहयोग आंदोलन का विस्तार :–

कांग्रेस के इस आन्दोलन का प्रभाव राजस्थान में भी देखा गया। अजमेर क्षेत्र में स्वदेशी एवं बहिष्कार आदि कार्यक्रमों के विस्तार हेतु अनेक सभा एवं संगोष्ठियाँ होने लगी, जिनमें शारदा की उल्लेखनीय भूमिका रही। असहयोग आंदोलन के दौरान नसीराबाद के लगभग 36 व केकड़ी के 25 दुकानदारों ने भविष्य में कभी विदेशी कपड़े न बेचने की शपथ ली। इसी तरह अजमेर के 136 थोक विक्रेताओं ने व ब्यावर के 79 थोक विक्रेताओं ने भी विदेशी कपड़ों को न मंगाने की शपथ ली, यही नहीं अजमेर के दर्जीयों व धोबियों ने एकमत होकर यह निर्णय लिया कि, विदेशी कपड़ों की सिलाई व धोने का स्वदेशी कपड़ों की तुलना में दुगना मेहनताना लिया जायेगा।[20]

असहयोग आन्दोलन के उद्देश्यों के अनुसार सभी के द्वारा अपने पद व उपाधियाँ त्याग दी गई। मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जैसे सफल व अधिक आय वाले वकीलों ने वकालत करना त्याग दिया। 1920 ई. में चाँदकरण शारदा ने भी राष्ट्रीय कांग्रेस के विशेष अधिवेशन (कलकत्ता), जिसकी अध्यक्षता लाला लाजपतराय ने की थी, में सभी के साथ कांग्रेस के एक अनुशासित कार्यकर्ता की भाँति अपनी बी.ए. व एल.एल.बी. की डिग्री तथा हजारों की आय वाली वकालत छोड़ दी और कहा, कि इन गुलामों के चिन्हों को वे अपने नाम के साथ जोड़े रखना उचित नहीं समझते और असहयोग आन्दोलन में पूर्ण शक्ति के साथ कूद पड़े।[21] जिसका विवरण पण्डित मोतीलाल नेहरू द्वारा असहयोग आंदोलन के समय निकाले गये अखबार 'डेली इंडिपेन्डेंट' में छपा, जो उनकी देशभक्ति, निर्भिकता व त्याग को दर्शाता है।[22] यथा –

Mr. Kunwar Chand karan Sharda, President, district congress committee, Ajmer has besides suspending his practice as a lawyer, retuned the degrees conferred on him by the Allahabad university. The following it's a copy of a letter which he has written to the Registrar of the Allahabad University ------

Dear Sir,

I am in the recipient of your University's B.A. & LL.B. degree and M.A. previous certificate. But I have after mature deliberation arrived at the conclusion that the conferment of these the any other degrees upon any Indian by any university established and controlled by the existing unjust government is an unmistakable and humiliating badge of slavery no self respecting Indian should willingly accept it. It is the hall mark of ignominious subjection in as much as all acadmical institutions which aim at fostering selfish western civilization in our country and are directly governed by the foreign rules of India are vicious snares for capturing our unsophisticated youth to perpetuate our thralldom. Only those who still revel in their disgrace and the nation's misery may retain the marks which every moment of their existence proclaim them as belots bereft of all sense of self respect . I for one refuse to degrade either my self or my country by prizing these marks of dishonor. It may be said that after all I am a product of your institution; but free national ideas are mostly derived from the vedic truths liberal teachings of Maharishi Dayanand Saraswati and the closely watching the general progress of the world towards democracy. Your degrees are but recognition of the fact that one who obtains them enlists him self unconsciously, a slave of the foreigner , whether he joins the foreign government or not. I firmly believe that the training of your youth in their mother tongue, and their instructions in national traditions, History, Literature, etc., alone will guarantee the efficiency of the lack of which the foreigner constantly accuses us. it can hardly he denied that the aim of education available in institutions controlled by government is not the creation of a united and self -respecting nation in india but the reverse of it . The history we are thought in your institution endangers distrust between one class and another, between Hindus and Musalmans and more over degrades our forefather in our estimation. We are so care fully brought up in an atmosphere of foreign ideals that by the time your finished product is not in world's market it is labelled western on all sides. But as no leopard can change his skin, no human being can change his inherited nature with the result that western ideals ill-suit our eastern modeof living and our young men begin to despise their own mode of life. This consummates their degeneration and denationalization and torn between Western ideals and eastern way of living they succumb to an enslaving system of foreign government.

Having realized all this I refuse to prize your degrees and according I return them to you".

सन् 1919–20 ई. में अजमेर के नया बाजार के चौपड़ में 'वन्दे मातरम' के नारे लगाना और ''नहीं रखनी यह सरकार नही रखनी'' के गीत गाना चाँदकरण शारदा की दिनचर्या सी बन गयी थी। इनके साथ अनेक स्थानीय कार्यकर्ता

टोलियों के रूप में गली–गली में यह गीत गाते हुए निकलते और जनसामन्य में ब्रिटिश विरोधी भाव भरते। 30 जनवरी 1921 ई. में चाँदकरण शारदा ने पुष्कर व केकड़ी में पुलिस की गिरफ्तारी से बचने के लिए गुप्त रूप से कांग्रेस समितियों की स्थापना की, जिनमें रामदीन जोशी, हरनारायण, सत्यनारायण, सोहनलाल, मिश्रीलाल, घीसूलाल, केशवचन्द्र तथा हरलाल आदि सदस्य बनाये गये।[23] इस समय शारदा 'तिलक स्वराज्य फण्ड' के लिए धन एकत्रित करने का कार्य भी किया। उन दिनों शारदा के आमंत्रण पर देष के प्रायः सभी वरिष्ठ नेता अजमेर आये। महात्मा गाँधी, पं. मोतीलाल नेहरू, श्रीमति सरोजनी नायडू, डॉ. अंसारी, मौलाना मुहम्मदअली, बैरिस्टर आसफ अली, प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति, देशबन्धु गुप्त, लाला लाजपतराय आदि कांग्रेस के सभी गणमान्य नेता समय–समय पर अजमेर आये और यहाँ के जनमानस को राष्ट्रीय भावनाओं से उद्वेलित किया। इसी समय चाँदकरण शारदा को **'राजपूताना कांग्रेस कमेटी'** का अध्यक्ष भी बनाया गया।[24]

चाँदकरण शारदा ने असहयोग आन्दोलन के दौरान खादी का प्रचार, पाठशालाएँ खोलना, जनसामान्य को पंचायतों का महत्व बताना तथा सरकारी जुलूस, दरबार आदि में जाने से रोकने आदि रचनात्मक कार्यों का भी कुशलता के साथ संचालन किया।

चाँदकरण शारदा के व्यक्तित्व का प्रमुख तत्व उनकी निर्भिकता थी। वे अपनी बात स्पष्ट रूप से निडर होकर कह जाते थे। इनकी निर्भिकता को प्रमाणित करने वाली एक घटना जो सन् 1920 ई. की है, जब वे तथा उनके साथी कलकत्ता कांग्रेस में भाग लेने जा रहे थे, तब अजमेर रेलवे स्टेशन पर एक अंग्रेज अफसर ने उन्हें व उनके साथियों को रेल के द्वितीय श्रेणी डिब्बे से उतार दिया और गाली दी कि, तुम काले आदमी हमारे साथ नही बैठ सकते, इस पर चाँदकरण शारदा व उस अंग्रेज अफसर के बीच धक्का–मुक्की हो गई और शारदा ने उसके थप्पड़ मार दिया। इस पर स्टेशन पर हंगामा मच गया। अंग्रेज स्टेशन मास्टर आया। चाँदकरण शारदा ने उन्हे टिकिट बतलाया और कहा कि, हम इसी ट्रेन में सफर करेंगे। स्टेशन मास्टर के इंकार करने पर शारदा व उनके साथी रेल की पटरी पर लेट गये। ट्रेन दो घण्टे लेट हो गयी और आखिर में उन्हें द्वितीय श्रेणी डिब्बे में बैठाया गया तभी ट्रेन रवाना हो सकी।[25]

8 जुलाई 1921 को करांची में खिलाफत कान्फ्रेंस हुई। इसमें अजमेर से कई प्रमुख उल्मा और मुस्लिम कार्यकर्ता शरीक हुए। वहाँ से लौटकर कांग्रेस के आदेशानुसार 16 अक्टूबर 1921 को उन्होंने सरकारी नौकरियों को हराम करार देने वाला फतवा छपवा कर बाँटा। इस फतवे को लिखने और बँटवाने वालों में सुल्तान हसन, नूरूदीप अब्दुल्ला, मौलाना मुइनुद्दीन, सैयद अब्बासअली, अब्दुल कादिर और मिर्जा अब्दुल कादिर बेग आदि थे। इन मुस्लिम नेताओं को जाब्ता फौजदारी दफा 108 और अंग्रेजी ताजरात हिन्द की दफा 124 (अ) के अनुसार सितम्बर 1921 ई. की पहली तारीख को एक साल की सजा और इस फतवे को बाँटने वाले बत्तीस हिन्दू–मुस्लिम स्वयंसेवकों को एक से छह माह तक की कारावास की सजा दी गई। इनमें चाँदकरण शारदा भी थे, इन्हें जाब्ता फौजदारी की दफा 108 के मातहत नेक चलनी की जमानत न देने पर तारीख 7 फरवरी 1922 ई. को छः महीने का कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।[26] जब ये जेल में थे, तब ही इनकी ज्येष्ठ पुत्री विद्यावती का विवाह ब्यावर के प्रसिद्ध देशभक्त दामोदरदास राठी के पुत्र विट्ठलदास राठी के साथ सम्पन्न हुआ। अंग्रेज सरकार ने उन्हें पैरोल छोड़ने की पेशकश की, किन्तु स्वाभिमानी चाँदकरण शारदा ने इसे अस्वीकार कर दिया।[27]

जेल में रहते हुए भी उन्हें आन्दोलन की गतिविधियों को जानने की अति जिज्ञासा रहती तथा अपनी पत्नी को आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करते, जो उनके द्वारा अपनी धर्मपत्नी सुखदा देवी को लिखे पत्र से जाहिर होता है।[28] यथा –

''आपका भेजा 'यंग इण्डिया' मुझे मिला, बस इसी प्रकार से आप अखबार भेजती रहें। कांग्रेस के काम को ठण्डा नहीं पड़ने देना चाहिए, बल्कि मेरे जेल आने पर ओर अधिक जोश से काम करना चाहिए। देखिये जो यंग इण्डिया आपने भेजा है, उसमें मौलाना अब्दुल कलाम आजाद की धर्मपत्नी ने लिखा है, कि यद्यपि मेरे पति को एक वर्ष की सजा हुई है, परन्तु मुझे कुछ परवाह नहीं। आप मोतीलालजी नेहरू, श्यामलाल नेहरू व जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नियों को भी काम करती देख आयीं हैं। आप सरोजनी नायडू से जब वो अजमेर आवें तब जरूर मिलना और मेरी ओर से संदेश कहना। अब आप यह बात तो एक मिनिट के लिए भी मन में लाइये ही नहीं, कि मैं अपने प्रण से डिग जाऊँगा। आप बाबूजी से स्पष्ट कह दें कि मेरे छुड़ाने का बिल्कुल प्रयत्न न करें। मदनमोहन मालवीय के पुत्र जेल में गये हैं और जो पत्र उन्होंने अपने पुत्र गोविन्द मालवीय व अपने भतीजे कृष्णकान्त मालवीय को लिखा है, उसमें विचारों में भेद रखते हुए भी पुत्र को बधाई दी है। मुझे यह पढ़कर प्रसन्नता हुई, कि अब आप सिवाय खादी के कुछ न पहनेंगी। इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहिए, भले कोई कुछ भी कहे।''

1921 ई. के अन्त तक देश में असहयोग आन्दोलन की लहर बहुत तीव्र गति से चल रही थी। आन्दोलन का स्वरूप अखिल भारतीय हो चुका था। दिसम्बर के अन्त तक गाँधी जी के अतिरिक्त कांग्रेस के अन्य सभी प्रमुख नेताओं को जेल में बन्द कर दिया गया था, जिनकी संख्या बीस हजार से अधिक हो चुकी थी। जेलों में कैदी बढ़ते जा रहे थे, किन्तु आन्दोलन की तीव्रता में कोई कमी नही आ रही थी। इन परिस्थितियों में सरकार हताश हो रही थी तथा गाँधी जी को गिरफ्तार करने का साहस नहीं जुटा पा रही थी।

चौरी–चौरा में आंदोलन का नेतृत्व अब्दुल्ला साई, लाल मोहम्मद और भगवान यादव कर रहे थे। इन तीनों नेताओं ने वहाँ युवकों का एक शक्तिशाली संगठन बना लिया था। भगवान यादव एक अवकाश प्राप्त सैनिक थे, वे युवकों को छापामार युद्ध का प्रशिक्षण दे रहे थे। अतः सबसे पहले वे ही अंग्रेजों की नजर में आये। थानेदार गुप्तेशवर सिंह ने उन्हें थाने पर बुलाकर पीटा तो जनता उत्तेजित हो गयी।[29]

5 फरवरी 1922 ई. को सत्याग्रही विशाल जुलूस के साथ थानेदार से यह पूछने गये कि भगवान यादव को क्यों पीटा। थानेदार को उत्तेजित भीड़ के आने की सूचना पहले ही मिल चुकी थी। उसने थाने पर सिपाहियों का पूरा इन्तजाम कर लिया था। अतः थानेदार ने भीड़ पर गोलियाँ चला दी, अपने साथियों की इस तरह बेरहमी से हत्या होते देख सभी का खून उबल चुका था। सभी की आँखों में उतर आये खून को देखकर थानेदार और अन्य पुलिसकर्मियों ने थाने के फाटक बंद कर लिये, किन्तु भीड़ ने भी थाने पर मिट्‌टी का तेल छिड़कर आग लगा दी, जिसमें छिपे सभी पुलिसकर्मियों की मृत्यु हो गयी मात्र एक सिपाही मुहम्मद सिद्दीकी ही बचकर भागने में सफल हुआ। शीघ्र ही गौरी सेना वहाँ आ पहुँची और तब शुरू हुआ फाँसी, कारावास का आसुरी सिलसिला। इस मामले में 172 लोगों को फाँसी दी गयी।[30]

जब गाँधी जी के पास इस घटना की सूचना पहँची तो वे बहुत ही दुःखी हुए और उन्होंने अपना आंदोलन तुरन्त वापस ले लिया। उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की गई लेकिन वे नहीं माने। उनका कहना था, कि अहिंसा और

खून–खराबे से प्राप्त स्वतन्त्रता तो क्या भगवान भी उन्हें नहीं चाहिए और इस प्रकार 1920 ई, में आरम्भ हुआ यह आंदोलन चौरी–चौरा की दुखद घटना के कारण बिना परिणाम देखे समाप्त हो गया।

दूसरी तरफ खिलाफत आन्दोलन भी समाप्त हो गया। असहयोग आन्दोलन में मुसलमानों का सहयोग लेने के लिये महात्मा गाँधी ने भी एक विशुद्ध साम्प्रदायिक प्रश्न खिलाफत का समर्थन किया था। यद्यपि अनेक विचारशील लोगों ने खिलाफत के एक विदेशी प्रश्न को भारत की स्वाधीनता के आन्दोलन के साथ जोड़े जाने का विरोध किया था, परन्तु हिन्दू–मुस्लिम एकता की गहमागहमी में इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया परन्तु एकता का यह उत्साहप्रद वातावरण वस्तुतः बालू की नींव पर ही खड़ा था। इसलिये जब टर्की में खिलाफत का जनाजा निकल गया तो भारत के मुसलमानों का भी मध्यकालीन सामन्तवादी स्वप्न अनायास ही भंग हो गया।

असहयोग आन्दोलन के स्थगित हो जाने से समस्त देश में निराशा व उदासी का वातावरण छा गया अचानक ही साम्प्रदायिक दंगें भड़क उठे। कानपुर, कलकत्ता, लाहौर, आदि नगरों के हिन्दू–मुस्लिम दंगों में अपार जन–धन की क्षति हुई। अजमेर में भी साम्प्रदायिक दंगे हुए। सारा देश साम्प्रदायिक दंगों की विभीषिका से थर्रा उठा।[31]

चाँदकरण शारदा इन सब घटनाओं से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहे थे 1923 ई. में मदनमोहन मालवीय जी के निमन्त्रण पर शारदा बनारस गये तथा महासभा को प्राणवान बनाने हेतु विचार–विमर्ष किया और वे कांग्रेस संगठन से विमुक्त होकर महासभा के प्रति अग्रसर हो गए। यद्यपि वे कांग्रेस की स्वतन्त्रता हेतु कि जाने वाली प्रत्येक गतिविधियों में सक्रिय रूप से अंतिम समय तक भाग लेते रहे।

चाँदकरण शारदा द्वारा क्रान्तिकारियों का सहयोग :–

देश की स्वतन्त्रता के लिए किये जाने वाले विभिन्न प्रयासों में क्रान्तिकारियों का अपना एक विशिष्ट महत्व रहा है। एक ओर जहाँ कांग्रेस के नेतृत्व में संवैधानिक तरीकों से भारत को आजाद कराने का प्रयास सक्रिय था वहीं दूसरी ओर देश के क्रान्तिकारियों का मानना था, कि अहिंसा और शांतिमय ढंग से आजादी नहीं मिल सकती। ये ब्रिटिश सरकार के अफसरों और उनकी सहायता करने वालों के मन में आतंक पैदा करना चाहते थे, ताकि वे महसूस करें कि उनका जीवन यहाँ सुरक्षित नहीं है और वे इस दबाव में आकर देश छोड़कर चले जाएँ।

राजस्थान में भी क्रान्तिकारियों को अपनी गतिविधियों का संचालन करने के लिये उपयुक्त वातावरण प्राप्त होता रहा। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस द्वारा 1915 ई. में अजमेर से एक सशस्त्र क्रान्ति चलाने की योजना बनाई गयी, जिसका भार गोपालसिंह खरावा, विजयसिंह पथिक, अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ आदि पर था, किन्तु दुर्भाग्यवश अंग्रेजों को इसकी भनक पहले ही लग गई अतः योजना को क्रियान्वित नहीं किया जा सका।[32] पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा पर्याप्त समय तक राजस्थान में रहे थे, रतलाम और उदयपुर राज्यों में उच्च पदों पर कार्य करने के साथ–साथ वे अजमेर भी रहे। यहाँ के वातावरण में क्रान्तिकारी विचारों को भरने में श्यामजी का महत्वपूर्ण योग रहा। अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, राव गोपालसिंह खरवा, विजयसिंह पथिक आदि की क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों के प्रति चाँदकरण शारदा का सदा ही सहयोग का भाव रहा।

बनारस षडयन्त्र अभियोग के बाद जब राव गोपालसिंह को उत्तरप्रदेश में बंदी बना लिया गया तो शारदा ने उन्हें छुड़ाने के अनेक प्रयास किये। 27 मार्च 1920 ई. को जब राव गोपालसिंह नजरबंदी से मुक्त होकर अजमेर आये तो कांग्रेस के तत्कालीन प्रधान के नाते शारदा ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया तथा नगर के मुख्य बाजार से होकर उनका जुलूस निकाला।[33] इसी प्रकार अर्जुनलाल सेठी के कारावास से मुक्त होकर आने पर शारदा की प्रेरणा से अजमेर में उनका जोरदार स्वागत किया गया। ब्यावर के क्रान्तिकारियों के सहयोगी सेठ दामोदरदास राठी तो शारदा के समधी ही थे, जो क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए आर्थिक सहायता दिया करते थे।[34] इनके साथ ही देश पर कुर्बान होने वाले अन्य क्रान्तिकारियों को भी शारदा पूर्ण सहयोग एवं संरक्षण प्रदान करते रहे।

1930 ई. में चन्द्रशेखर आजाद का अचानक अजमेर आगमन हुआ। उस समय वे अपने आपको सरकारी गुप्तचरों की नजरों से बचाकर दिल्ली जाना चाहते थे। वे सीधे चाँदकरण शारदा के निवास स्थान 'शारदा भवन' आ गये। चन्द्रशेखर को देखकर शारदा उनसे गले मिले और आने का कारण पूछा। आजाद ने कहा कि ''पुलिस मेरा पिछा कर रही है, उनसे मेरी रक्षा कर मुझे दिल्ली पहुँचाने का प्रबन्ध करें।'' शारदा ने कुछ देर विचार करने के बाद अपने बच्चों को आनासागर की तरफ, जहाँ उनकी नाव पड़ी थी, जाने के लिये कहा व खुद भी चन्द्रशेखर को साथ लेकर चलने लगे।

आनासागर पहुँचने के बाद उन्होंने तुरन्त नाव को पानी में उतारा और चन्द्रशेखर को उसमें बैठा कर नाव स्वयं खेने लगे। चीफ कमीश्नर की कोठी के पास नाव को रोक कर चन्द्रशेखर को उसी में बैठे रहने का अनुरोध कर बजरंगगढ़ से वापस घर लौट आये। थोड़ी देर में चन्द्रशेखर के बारे में पूछताछ करते हुए पुलिस भी उनके घर आ पहुँची। उन्होंने शारदा से चन्द्रशेखर के बारे में पूछताछ की, किन्तु शारदा ने अनभिज्ञता जाहिर की, इस पर पुलिस ने उनके घर के प्रत्येक कमरे की घहन तलाशी ली, किन्तु कुछ न मिलने पर निराश लौट गई। शारदा प्रातः चार बजे पुनः नाव पर पहुँच गये, जहाँ चन्द्रशेखर रात से ही बैठे थे वहाँ से वे चन्द्रशेखर को साथ लेकर चौरसियावास गाँव की ओर पैदल चल दिये। गाँव पहुँचने के बाद अपने परिचित ऐक मुवक्किल को बैलगाड़ी जोतने को कहा और उसमें चन्द्रशेखर को ओढ़ा कर लिटा दिया तथा गाड़ीवान को उन्हें किशनगढ़ रेलवे स्टेशन पर उतार देने को कहा दिया। अन्ततः किशनगढ़ से रात्रि की मेल से चन्द्रशेखर दिल्ली पहुँच गये। इस प्रकार चाँदकरण शारदा जीवन पर्यन्त क्रान्तिकारियों को पूर्ण सहयोग व संरक्षण प्रदान करते रहे।[35]

चाँदकरण शारदा ने अपनी पुस्तकों के माध्यम से भी देश के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने असहयोग आंदोलन के दौरान जनसामान्य को स्वराज्य का महत्व बताने के सन्दर्भ में ''माडरेटों की पोल'' नाम से एक पुस्तक भी लिखी, जिसमें असहयोग आन्दोलनों पर लगाये हुए आक्षेपों पर युक्तियुक्त उत्तर व स्वराज के लाभ दर्शाये गये है।[36]

कांग्रेस विच्छेद पश्चात् चाँदकरण शारदा की स्वतंत्रता आन्दोलन में भूमिका :–

असहयोग आन्दोलन की समाप्ति के बाद कांग्रेस के साथ वैचारिक मतभेदता के कारण चाँदकरण शारदा ने कांग्रेस से अपने आपको अलग कर लिया और देशी रियासतों की प्रजा, जो उस समय राजाओं व अंग्रेजों की दोहरी गुलामी में जकड़ी हुई थी, की स्वतंत्रता को अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया, किन्तु फिर भी चाँदकरण शारदा ने भारत की स्वतन्त्रता के उद्देश्य को लेकर कांग्रेस द्वारा चलाए गए सविनय अवज्ञा आन्दोलन व भारत छोड़ो आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया।

1930 ई. में गाँधी जी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह हुआ तब हरिभाऊ उपाध्याय, विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी आदि ने भी सत्याग्रह किया। फलतः उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।[37] इनके बाद में भी यहाँ के कार्यकर्ता आन्दोलन में भाग लेते रहे, इन कार्यकर्ताओं में ज्वाला प्रसाद शर्मा, मुकुट बिहारीलाल भार्गव, चाँदकरण शारदा आदि मुख्य रहे।

8 अगस्त 1942 ई. को महात्मा गांधी ने ब्रिटिश भारत में भावी संघर्ष के लिए नारा दिया ''अंग्रेजो भारत छोड़ों'' तथा रियासतों के लिए नारा दिया ''राजाओं अंग्रेजों का साथ छोड़ों।''गांधी जी ने रियासतों के नेताओं को कहा, कि उन्हें अपने राजा महाराजाओं को यह चुनौती दे देनी चाहिए, कि वे ब्रिटिश सरकार से तुरन्त अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लें और यदि राजा लोग ऐसा न करें तो वे जन संघर्ष शुरू कर देवें।

इस प्रकार सम्पूर्ण राजस्थान में जन आक्रोश बढ़ गया, जिसमें चाँदकरण शारदा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने राजपूताना मध्य भारत सभा अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद आदि संगठनों के द्वारा रियासती जनता को निरंकुश राजाओं व ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध उठ खड़े होने का आह्वान किया तथा भारत छोड़ो आन्दोलन के समय अजमेर, मारवाड़ व अन्य देषी रियासतों में सभाओं का आयोजन कर आन्दोलन को उसके सफल परिणाम तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अतः उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह कहने में काई संषय न होगा कि चाँदकरण शारदा ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश व समाज के लिए कार्य करते हुए गुजारा तथा प्रारम्भ में कांग्रेस व बाद में राजपूताना मध्य भारत सभा व अखिल भारतीय देषी राज्य प्रजा परिषद को साधन बनाकर अपने स्वतंत्रता के लक्ष्य को सफल परिणिति तक पहुँचाया। अपने क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है, क्योंकि दोहरी गुलामी में जकड़ी रियासतों की प्रजा, जिस समय सिर ऊँचा उठा कर बात भी नही कर पाती थी, उस समय साम्राज्यवादियों का सामना करना निश्चय ही साहसपूर्ण था, भले ही वो देश ी रियासतों के नरेश हो अथवा ब्रिटिश सरकार।

पाद टिप्पणी

1. शुक्ल आर.एल., आधुनिक भारत का इतिहास, पृ.सं. 467–69
2. उपर्युक्त, पृ.सं. 500
3. अजमेर कमिश्नर रिकार्ड, कान्फीडेन्शियल, नं. 22, 25 नवम्बर 1912 ई.
4. भारतीय भवानीलाल, देशभक्त कुंवर चाँदकरण शारदा, पृ.सं. 7
5. गोयल सौभाग्य, अजमेर में जन आन्दोलन, पृ.सं. 107
6. देश भक्त चाँदकरण शारदा, पृ.सं. 11–12, एन.एम.एम.एल, नई दिल्ली
7. सी.आई.डी. रिपोर्ट नं. 26, क्रमांक ओ.सी. 01, 18 मई 1916 ई.
8. गोयल सौभाग्य, अजमेर में जन आन्दोलन, पृ.सं. 80
9. कंप्लीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानन्द, भाग 2, पृ.सं. 147
10. एस. विजयालक्ष्नी, हीलींग द ब्रीच एण्ड द होम रूल मूवमेंट इन ए सेन्टेनरी हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन नेशनल कांग्रेस, वोल्यूम 1
11. प्रधान जी.पी.एण्ड भागवत ए.के., लोकमान्य तिलक : ऐ बायोग्राफी, पृ.सं. 32
12. सुमन क्षेमचन्द्र, त्याग की धरोहर, पृ.सं. 6
13. भारतीय भवानीलाल, देशभक्त कुंवर चाँदकरण शारदा, पृ.सं. 7
14. चाँदकरण शारदा द्वारा अपनी धर्मपत्नि को लिखा पत्र, 20 जनवरी 1920 ई.
15. रवीन्द्र कुमार, एसे ऑन गाँधी पॉलिटीक्सः द रोलेट सत्याग्रह ऑफ 1919 पृ.सं. 23
16. उपर्युक्त
17. चाँदकरण शारदा पेपर्स, फाइल 87,एन.एम.एम.एल नई दिल्ली
18. अजमेर रिकॉर्ड, संख्या 425, सीक्रेट इण्टेलीजेन्स का कमिशनर को लिखा पत्र क्र. 17, 7 अप्रैल 1921 ई.
19. बामफोर्ड पी.सी. हिस्टी ऑफ खिलाफत एण्ड नॉन कॉपरेषन मूवमेंट, पृ.सं. 34
20. उपर्युक्त, पृ.सं. 32–35
21. इंडियन नेशनल कांग्रेस प्रोग्रेस ऑफ नॉन कॉपरेषन मूवमेंट स्वेदषी बुलेटिन नं. 25, पृ.सं. 3,4
22. चाँदकरण शारदा पेपर्स, फाइल 76, आर्य मार्तण्ड, 7 जनवरी, 1925,पृ.सं. 2
23. सोर्ट स्केच ऑफ द लाइफ ऑफ देशभक्त चाँदकरण शारद, एन.एम.एम.एल नई दिल्ली
24. उपर्युक्त
25. अजमेर कमिश्नर गोपनीय रिकॉर्ड नं. 76, 1921 ई.
26. भारतीय भवानीलाल, देशभक्त कुंवर चाँदकरण शारदा, पृ.सं. 10
27. उपर्युक्त, पृ.सं. 65
28. अजमेर पुलिस रिकार्ड, फाईल 29, 7 अगस्त 1921, पृ.सं. 925
29. सुमन क्षेमचन्द्र, त्याग की धरोहर, पृ.सं. 197
30. भारतीय भवानीलाल, देशभक्त कुंवर चाँदकरण शारदा, पृ.सं. 10

31. चाँदकरण शारदा द्वारा अपनी धर्मपत्नी को लिखा पत्र, 22 मार्च 1922 ई.

32. डॉ ब्रजभूषण, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, पृ.सं. 94

33. उपर्युक्त, पृ.सं. 95

34. भारतीय भवानीलाल, देशभक्त कुंवर चाँदकरण शारदा, पृ.सं. 59

35. उपर्युक्त, पृ.सं. 60

36. सुमन क्षेमचन्द्र, त्याग की धरोहर, पृ.सं. 114

37. हूजा रीमा, ए हिस्ट्री ऑफ राजपूताना, पृ.सं. 1122